अध्याय- 8

कुछ महत्वपूर्ण वैयक्तिक अध्ययन

कुछ महत्वपूर्ण वैयक्तिक अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में गणनात्मक ढंग से तथ्यों का समाकलन करके उसे विविध अध्यायों में शोध के उद्देश्य के अनुरूप विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है परन्तु परिमणात्मक ढंग से तथ्यों को विश्लेषित करने के साथ ही साथ उसे गुणात्मक आधार पर भी विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि तथ्यों को गुणात्मकता के आधार पर भी सहसम्बन्धित करने में विविध प्रक्रियाओं से परिवर्तित होना होता है। इसके उत्तरदाताओं से उन तथ्यों को ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है जो उनके लाक्षणिक वर्णन दृश्टान एवं अन्य काल्पनिक चित्रों से सहसम्बन्धित होते हैं। यह कहना अतिश्युक्ति नहीं होगा कि इसके द्वारा उत्तरदाताओं के बारे में व्यवस्थित संग्रह प्राप्त किया जाता है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह व्यक्ति समाज के अन्तर्गत एक इकाई के रूप में किस प्रकार क्रियाशील है और किसी परिवर्तित परिस्थिति में किस प्रकार से वह अपने आप को समायोजित करते हुए अन्त:क्रियात्मक सम्बन्धों को बनाये रखता है। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन के विविध पक्षों को ध्यान में रखते हुए कुछ चयनित उत्तरदाताओं से अध्ययन के तुलनात्मक पहलुओं को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है

तथा इसके द्वारा परिमणात्मक पक्षों में सहसम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

श्रीमान 'क' (1)

वाराणसी जनपद के इंगलिशिया लाइन के पास रहते हैं। अपने स्थानीय उपजाति विभाजन के आधार पर स्वयं को 'रहदरिया' बताते हैं, विवाहित हैं तथा 40 वर्ष के सीमा रेखा को स्पर्श कर चुके हैं। परिवार में पत्नी को लेकर बच्चों की संख्या 4 है जिसमें 3 पुत्रियां एवं पुत्र हैं। जातिगत व्यवस्था (झाड़ू लगाना) में लिप्त होकर यह अपने परिवार का भरण-पोषण किसी प्रकार कर लेते हैं। परिवार का भरण-पोषण एवं अन्य स्वस्थ्य प्रक्रियायें इसलिए प्रभावित हैं क्योंकि ये बहुत सुनियोजित ढंग से परिवार का खर्चा नहीं चलाते। वेतन प्राप्ति के बाद वेतन प्राप्त करने वाले दिन इनका अस्तित्व सामान्य धरातल से कुछ ऊपर रहता है। परिणामस्वरूप महीने के कई दिन पहले से इन्हें आर्थिक तंगी का शिकार होना पड़ता है। यद्यपि वह अपने परिवार को सुचारू रूप से चलाने का प्रयास करते हैं परन्तु विविध प्रकार के अपने कुटुम्ब में प्रचलित कुरितियां एवं दबाव के परिणास्वरूप वह स्वस्थ्य रणनीति बनाने में सफल नहीं हो पाते हैं।

बच्चों के शिक्षा-दिक्षा के संदर्भ में वह आजभी परम्परावादी दृष्टिकोण से ग्रसित होने के कारण लड़कियों की

तुलना में लड़कों को अधिक महत्व प्रदान करते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि लड़कियां पराया धन होने के कारण उन पर बहुत अधिक धन का खर्च करना तर्क संगत नहीं है। विविध प्रकार के आधुनिक प्रभावों के उपरान्त भी उनकी मानसिकता में वह अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया जिसे आना चाहिए। आधुनिक सम्प्रेषण के विभिन्न माध्यमों से जागरूकता के प्रसार को वह बहुत अधिक महत्व प्रदान नहीं करते और अपने संकीर्ण बातों के आगे किसी भी प्रकार के परिवर्तन से उन्मुखता को अपनाने के लिए तैयार नहीं होते। जाति व्यवस्था के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत ही विस्फोटक है। उन्हें जब इस बात का आभास कराया जाता है कि अपरिहार्य स्थिति के कारण आपका समुदाय सदैव सवर्णों का शिकार रहा है। इस पर वह क्षुब्ध हो जाते हैं और हिन्दू समाज व्यवस्था के प्रति अपना प्रतिशोधात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि चन्द दिनों दिखावटी कार्यक्रमों से पतितों को हिन्दू समाज व्यवस्था को अवरिल धारा से नहीं जोड़ा जा सकता है। उन्हें अपने हीन दशा का गम नहीं है परन्तु सवर्णों के प्रति बहुत अच्छा स्वस्थ्य दृष्टिकोण भी नहीं है।

श्रीमान 'ख' (2)

श्रीमान 'ख' युवक हैं जिनकी अवस्था 22 वर्ष के आस-पास है। अपने जाति के सामाजिक स्थिति के बारे में सोचकर कभी-कभी बहुत विचलित हो जाते हैं। इनकी शिक्षा हाई स्कूल स्तर की है। यद्यपि संस्थागत शैक्षिक ज्ञान सामान्य स्तर का है परन्तु व्यवहारिक स्तर पर उनके ज्ञान में तीक्षणता का अभाव नहीं है। शोध अध्ययन के संदर्भ में उनसे बात-चीत करने पर स्पष्ट होता है कि वह अपनी वर्तमान स्थिति के संदर्भ में अभाव बोद्ध से ग्रसित हैं और सवर्णो के साथ अन्त:सम्बन्धों की बात वह बिल्कुल संवेदनात्मक रूप से उग्र हो जाते हैं। उनका यह स्पष्ट मत है कि भारतीय जाति समाज की जातिगत व्यवस्था में अपने नीहित स्वार्थ के लिए उनका शोषण किया है। उनका ऐसा स्पष्ट मत है कि उनके समुदाय के लोगों का शैक्षिक स्तर जैसे-जैसे बढ़ रहा है वैसे-वैसे वह समाज में व्याप्त मूल्यों से सम्बन्धित उभय संकट का सामना करने के लिए तैयार हैं। उनका ऐसा स्पष्ट मत है कि शैक्षिक स्तर के विकास से सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विकास की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि उनके डोम जाति के प्रति लोगों की धारणाओं में विकास के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें अपने परम्परागत दृष्टिकोण में अपेक्षित परिवर्तन लाने का

प्रयास करना चाहिए। अगर ऐसा सम्भव नहीं है तो वैयक्तिक स्तर साथ ही साथ सामुदायिक स्तर पर किसी भी प्रकार के परिवर्तन की अपेक्षा नहीं कर सकते। अत: सम-सामायिक परिस्थियों में आशातीत परिवर्तन के लिए यह आवश्यक है कि हमारे समुदाय के सदस्य अपने नीहित स्वार्थों से ऊपर उठकर कुछ रचनात्मक योगदान प्रदान करने की व्यवस्था करें।

श्रीमति 'ग' (3)

इस समुदाय के महिला उत्तरदाता है, इनकी अवस्था 50 वर्ष है तथा शैक्षिक योगयता के अन्तर्गत इन्हें अपर्ण कहा जा सकता है। वह जैतपुरा वार्ड डिगिया मुहल्ले से सम्बन्धित हैं। सफाई और कूड़ा उठाने का काम करती है। निजी तौर पर कभी-कभी लोगों के मैनहोल एवं शौचालय की सफाई करके कुछ अतिरिक्त आय का अर्जन करती है। इनके परिवार में पति और तीन लड़की तथा दो लड़की का भरा पूरा परिवार है। इनके बच्चे भी सफाई काम से जुड़े हैं। परन्तु निजी संगठनों से परिवार का भरण-पोषण उपलब्ध आय से नहीं हो पाता है क्योंकि परिवार के अन्तर्ग इनके व्यय का तरीक सुव्यस्थित नहीं है। इनके आवास में दैनिक सुविधाओं से जुड़ी हुई बहुत सी सुविधाओं का अभाव है। परिणामस्वरूप इनके आवास का प्रारूप एवं स्तर संतोषप्रद नहीं हैं। इनके दैनिक क्रियाओं से निवृत्ति होने के लिए

घर से बाहर जाना होता है एवं सरकारी स्तर पर उपलब्ध नलों के माध्यम से पीने योग्य पानी एवं स्थान आदि की व्यवस्था करना होता है। बच्चों के शैक्षिक स्तर संतोषप्रद न होने के कारण इनको अच्छा व्यवसाय प्राप्त नहीं हो सका है। परिणामस्वरूप इनमें व्यवसायिक गतिशीलता का अभाव पाया जाता है। यद्यपि इन लोगों की अपेक्षायें आरक्षण की सुविधा के परिणामस्वरूप अच्छे नौकरी प्राप्त की है परन्तु घर एवं आस-पास स्वस्थ्य पर्यावरण के अभाव में इन्हें बाल्यावस्था में ही पढ़ाई से स्वयं को दूर करना पड़ा। ज्ञान के परिधि का सीमित होने के कारण इनमें सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर प्रदत्त सुविधाओं के बारे में एवं अन्य प्रकार के कल्याणकारी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी नहीं है। परिणामस्वरूप यह चाहते हुए अपने शैक्षिक स्तर एवं व्यवसायिक स्तर पर वह सुधार नहीं ला पाते हैं जिनकी अपेक्षा करते हैं।

श्रीमती 'घ' (4)

इस समुदाय के वृद्ध जन हैं भारतीय समाज के प्रति इनका दृष्टिकोण द्वेषपूर्ण नहीं है परन्तु भारतीय समाज के अन्तर्गत सवर्णों के प्रताड़ना की बात इनके चहरे से स्पष्ट रूप से झलकती है। यह वाराणसी में मणिकणिका घाट के पास अपनी बस्ती में रहते हैं तथा दिन पर दाह क्रिया से सम्बन्धित विविध

प्रकार के क्रियाकलापों में स्वयं को व्यस्त रखते हैं इस प्रकार के कार्यों में व्यस्त रहने के कारण इन्हें अपने एवं परिवार के सदस्यों के भरण-पोषण के लिए सहायता प्राप्त हो जाती है। इनकी पत्नी चीरकालिक रोग (दमा) से ग्रसित हैं तथा अर्थाभाव के उस प्रकार का इलाज नहीं करा पाती है जिसकी अपेक्षा की जाती है। अत: रोग उत्तरोत्तर भयावह होता जा रहा है।

परम्परागत व्यवसाय से हटकर कुछ दूसरे व्यवसाय को अपनाने के संदर्भ में इनका दृष्टिकोण बहुत साफ नहीं है। यह सभी चीजों का अपने नियत पर छोड़ देते हैं और यह मानकर चलते हैं कि हमने जैसा किया उसी तरह हमको भुगतना है। यह अपने कष्ट को स्वयं सहकर दूसरों को उसका भागीदार बनाना नहीं चाहते हैं। लड़के इनके नियन्त्रण में नहीं हैं। परिणामस्वरूप इनका सोच और अधिक भाग्यवादी होता जा रहा है। श्मशान से सम्बन्धित गतिविधियों में लिप्त होने के कारण इनकी जीविका किसी प्रकार चल जाती है। इस प्रकार वह स्वयं कुटुम्ब और समाज के प्रति बहुत आशान्वित नहीं हैं।

कुमारी 'क-क' (5)

कुमारी डोम जाति से सम्बन्धित 19 वर्ष नवयुवती है जो इन्टर कक्षा की छात्रा है। यह अपने परिवार के साथ हरिश्चन्द्र घाट के पास रहती है तथा वाराणसी के दुर्गाचरण

इन्टरमीडियट कालेज में पढ़ती है। इन्हें अपने परिवार एवं समुदाय के प्रति कुछ करने की ललक है परन्तु अपनी परिसीमाओं को देखकर यह बेचैन हो जाती है। पढ़ाई में कुशाग्र होने के साथ-साथ अन्य जातियों के साथ सामाजिक अन्त:क्रिया के परिप्रेक्ष्य में तथ्यगत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया तो उन्होंने स्पष्ट तौर पर कहा कि सम्बन्ध बनाने के लिए तो बेचैन रहती हूं लेकिन सवर्ण जाति की छात्रायें हमारे जातिगत स्थिति के कारण कुछ विशेष प्रकार के संकोच का अभाव करती हैं। परिणामस्वरूप मैं अभाव बोद्ध से पीड़ित हो जाती हूं और नये प्रकाश की तलाश में कुछ ढूंढने के लिए बेचैन रहती हूं।

भारतीय समाज पर विविध प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव के उपरान्त भी लोगों का जाति के प्रति मानसिक स्थिति में अपेक्षित परिवर्तन नहीं हुआ है। कुमारी 'क' का ऐसा मत है कि जाति से सम्बन्धित धारणा लोगों के मानसिक पटल पर कुछ इस प्रकार से अंकित हो गयी हैं कि उसे सामान्य रूप से छोड़ना सम्भव नहीं है। इसका परिणाम यह है कि हमारे समुदाय में प्रौढ़ एवं वृद्ध लोग भले ही सवर्णो के प्रति उत्तरदायी दृष्टिकोण अपनायें परन्तु युवा वर्ग सवर्णो के प्रति बहुत प्रतिशोधात्मक दृष्टिकोण रखते हैं जिसका ज्वलंत रूप राजनीतिक जागरूकता के

परिप्रेक्ष्य में एवं जाति से सम्बन्धित विविध प्रकार के ध्रवीकरण के अन्तर्गत देखा जा सकता है।

श्रीमान 'ख-ख' (6)

श्रीमान 'ख-ख' 37 वर्ष के प्रौढ़ युवक हैं। कक्षा 8 तक पास हैं। पूर्व माध्यमिक विद्यालय में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में कार्यरत हैं। शैक्षिक संगठन में कार्यरत होने के कारण उन्हें शैक्षिक वातावरण प्राप्त है। उन्हें अपने जाति के सामाजिक स्थिति के प्रति बहुत शिकायत है। समाज के लोग विशेषकर सवर्ण लोग परिवर्तित वातावरण में बहुत सहनभूति के साथ नहीं देखते और परम्परागत रूप से उनके साथ व्यवहार करते हैं। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि उनके जाति समुदाय में शिक्षा के द्वारा महत्वपूर्ण परिवर्तन एवं बदलाव आ रहा है। परन्तु इस परिवर्तन बहुत दुरगामी और अस्थाई प्रभाव देखने को नहीं मिलता। उन्होंने अपने जाति समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य यह बताया कि जो लोग अपने शैक्षिक योग्यता एवं आरक्षर के बल पर उच्च प्रस्थिति प्राप्त कर गये हैं वह आज अपने ही प्रति कुटुम्ब के लोगों को आगे बढ़नें में सहयोग प्रदान नहीं कर पा रहे हैं। उनके अनुसार इस प्रकार की विचारधारा उनके जाति समुदाय के गतिशीलता को प्रभावित कर रही है।

अपने ही संदर्भ में कुछ और महत्वपूर्ण तथ्य स्पष्ट करने के संदर्भ में उन्होंने कहा कि हम जाति समुदाय के सदस्यों से सामाजिक सम्पर्क बनाये रखने के लिए प्रयास तो करते हैं परन्तु अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं होती है परन्तु दूसरों सवर्णों से यदि सम्बन्ध सम्बन्ध बनाने का प्रयास करते हैं तो उससे औपचारिकता की पूर्ति हो जाती है परन्तु सही अर्थों में मेल-मिलाप नहीं हो पाता है। सामाजिक सम्बन्धों के इसी अभाव के कारण अभावबोध की अनुभूति होने लगती और कभी-कभी अशान्त मन प्रतिशोध की ज्वाला में धधकने लगता है।

उनका स्पष्ट मत है कि यदि भारतीय समाज के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के अवरिल धारा में हमारे समुदाय के लोगों को लेकर चलना है तो यह तभी सम्भव हो जब डोम समुदाय के सदस्यों के साथ भाईचारे का निकटतम सम्बन्ध स्थापित किया जाय, अन्यथ: सारी चीजें कपोल कल्पना का विषय बन जायेंगे। उत्तरदाता ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि अन्त:सम्बन्धों की कमी उनके समक्ष विविध प्रकार के सामाजिक-सांस्कृतिक गतिरोध को उत्पन्न करती है।

श्रीमती 'ग-ग' (7)

29 वर्षीय श्रीमती 'ग-ग' एक ग्रहणी हैं। सफाई कार्य में लगी हुई हैं परन्तु अपने घर का कार्य ठीक रूप से सम्पन्न

करना तथा सफाई एवं स्वच्छता को बनाये रखना इनके दैनिक कार्य अहम मुद्दा है। इनके पति सफाई कार्य में नगर निगम कर्मचारी हैं तथा भदऊं के पास इनका आवास है। इनका परिवार आर्थिक रूप से विपन्न है। इनके परिवार में 4 बच्चें है 3 लड़के और 1 लड़की और इन बच्चों के भविष्य एवं उनके व्यवसायिक जीवन के प्रति कुछ सोचने का सवाल ही नहीं उठता। यद्यपि सरकारी तन्त्र के माध्यम से इन्हें विविध प्रकार की सुविधायें प्राप्त हैं परन्तु अर्थाभाव के कारण एवं बच्चों का पढ़ने के तरफ रूझान न होने के कारण इन्हें इधर-उधर एवं आवांछनीय व्यवहार करना विशेष रूप से पसन्द हैं। श्रीमती ग-ग विविध प्रकार के अभाव के कारण अपने आवास में स्वस्थ्य पर्यावरण का निर्माण नहीं कर पाते हैं।

वर्ष प्रयत्न मनाये जाने वाले विविध त्यौहारों एवं धार्मिक अवसरों को मनाने की इन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। परिणामस्वरूप इनका ऐसा विचार है क्यों न अपने धर्म को बदल कर ऐसे धर्म को स्वीकार किया जाय जिसमें लोगों को एक दूसरे के साथ रहने तथा दुख एवं प्रशन्नता में भागेदारी का उचित अवसर प्राप्त हो सके। यही कारण है कि डोम जाति के लोग समाज के अन्य सवर्णो के प्रति बहुत उदारवादी नहीं हैं।

वरन सदैव उनके प्रति बदले की भावना से व्यवहार करना चाहते हैं।

धार्मिक अवसरों पर विविध प्रकार के प्रतिबन्ध थोपे जाने के कारण इनका उन अवसरों के प्रति कोई रचनात्मक रूझान नहीं है। यही कारण है कि हिन्दू धर्म में संस्थापित बड़े धार्मिक अवसरों का न मानकर स्थानीय संस्कृति से प्रभावित क्षेत्रीय धार्मिक अवसरों के प्रति उनकी निष्ठा बढ़ रही है। अत: डोम समुदाय के लोग संक्रमण की स्थिति में स्वयं को रखते हुए बदलाव को बहुत अपेक्षित निगाह से देखने प्रयास करते हैं। इनका स्पष्ट रूप से कहना है कि डोम जाति के लोग दिन हीन दशा के लिए भारतीय समाज के जाति व्यवस्था उत्तरदायी हैं।

श्री 'घ-घ' (8)

श्री 'घ-घ' डोम समुदाय के प्रबुद्ध क्रमचारी हैं। स्नातक स्तर तक शिक्षा प्राप्त जाति आरक्षर के आधार पर उत्तरप्रदेश पावर कार्पोरेशन में एक अधिकारी के रूप में कार्यरत है। सरकारी संगठन में कार्यरत होने के उपरान्त भी उनमें विविध प्रकार अन्त:क्रिर्यात्मक सम्बन्धों का सामना करना पड़ता है। अपने जाति सामाजिक स्थिति के प्रति जागरूक रहते हुए अपेक्षित परिवर्तन न पाने के कारण वह भारतीय समाज व्यवस्था के विविध पक्षों के प्रति महामर्त रहते हैं। इनका ऐसा विचार है कि

श्रेणीकरण एवं निम्नीकरण के कारण हिन्दू समाज व्यवस्था अनुसूचित जाति विशेषकर डोम जाति की दशा दयनीय रही है। उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि इसी जाति व्यवस्था के कारण डोम जाति के लोग उत्थान के पद पर आगे बढ़ नहीं सके। उन्हें आगे बढ़ता हुआ देखकर हिन्दू समाज व्यवस्था के सवर्ण लोग प्रशन्न नहीं रहते वरन इर्ष्या करते हैं।

डोम जाति के सदस्य उच्च जाति के स्वामित्व को स्वीकार के पक्षधर नहीं हैं। वे सवर्णो द्वारा किसी प्रकार के उपकार को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं और न ही सवर्णो के घड़ियाली आंसू के माया जाल में फंसना चाहते हैं उनका कहना है कि सदैव सवर्णो ने डोम जाति के लोगों का अपने नीहित स्वार्थो के लिए शोषण किया है।

यद्यपि यह उनका मानना है कि शिक्षा द्वारा उनकी शैक्षिक स्थिति तो सुधरती है। साथ ही साथ उनका अपने प्रति तथा समाज के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव भी आता है। उनकी ऐसी मान्यता है कि यद्यपि अनुसूचित जाति में विशेषकर डोम जाति के लोगों का हृदय से उत्थान करने की व्यवस्था की जाय तो डोम जाति के जीवन में चतुर्दिक विकास हो सकता है परन्तु ऐसा सम्भव नहीं हो पाता है क्योंकि सम्पूर्ण सुविधाओं के प्रदान करने के उपरान्त भी अनुसूचित लोग स्वयं में अभाव की अनुभूति

करते हैं। उससे मुक्ति पाने के लिए प्रयास तो करते हैं परन्तु इस प्रयास में उन्हें विविध प्रकार के अवरोधों का सामना करना पड़ता है। अतः श्री घ-घ का ऐसा स्पष्ट मत है कि जब तक स्वस्थ्य वातावरण का निर्माण नहीं होगा, जातिगत कुंठाओं को दूर नहीं किया जायेगा तब तक समाज में अमरसता का प्रभाव नहीं होगा।

श्रीमती 'ट' (9)

श्रीमती 'ट-ट' एक नर्सिगं होम में नर्स के पद पर कार्यरत हैं तथा महिलाओं के प्रसव से सम्बन्धित इकाई में अपने कार्यो को प्रतिपारित करती है। उनका यह स्पष्ट मत है कि जाति व्यवस्था के कारण ही हिन्दू समाज में डोम जाति के लोगों का निम्न स्थान रहा है तथा हिन्दू समाज व्यवस्था में उन्हें किसी प्रकार के गतिशीलता के योग्य नहीं माना जा सकता है। यद्यपि परिवर्तित सामाजिक परिस्थितियों में उन्हें विविध प्रकार के कल्याणकारी कार्यक्रमों के अन्तर्गत सुविधायें प्राप्त हुई हैं परन्तु सवर्णो के संकीर्ण विचारधाराओं के कारण वे इन सुविधाओं का अपेक्षित लाभ नहीं उठा पाये।

यह वही हिन्दू समाज है जो उन्हें पूजा-पाठ में भी देवी-देवताओं के संदर्भ में विभेद करता है। परिवर्तित परिस्थितियों में अब वे किसी भी देवी-देवता की उपासना कर सकते हैं परन्तु

साधारणतय: शक्ति की उपासना में एवं क्षेत्रीय देवी-देवताओं में अधिक विश्वास करते हैं। यही कारण है कि डोम समुदाय के लोग डिह बाबा जैसे देवी-देवताओं का पूजन, भजन और स्मरण करते हैं। प्रतिशोध की भावना से प्रभावित होने के कारण धार्मिक क्रियाकलापों में खुलकर भाग लेते हैं और सवर्ण हिन्दुओं के समक्ष यह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि इस प्रकार के धार्मिक अवसरों में हम और हमारा संगठन किसी रूप में कम नहीं है।

श्रीमती ट का स्पष्ट मत है कि परिवर्तित परिस्थितियों के साथ यदि हम बदलाव की बात करते हैं तो उसी के अनुरूप के बदलते और इसे हिन्दू समाज व्यवस्था शिपह सलाह बहुत मर्यादित ढंग से नहीं देखते हैं और उनकी आलोचना करते हैं। अत: उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण बहुत ही महत्वपूर्ण और सामायिक हैं। उनकी वेदनायें उनके स्वयं के गतिविधियों से प्रकट होते हैं जिनका उचित ढंग से विश्लेषण होना चाहिए।

श्रीमान 'ठ' (10)

श्रीमान 'ठ' 20 वर्ष के नौजवान हैं तथा अपने जाति एवं जाति के सदस्यों के प्रति सिर्फ चिन्तित नहीं रहते वरन कुन्ठित हैं। वह वाराणसी सदर बाजार के पास रहते हैं तथा शिक्षित बेरोजगार स्नातक शिक्षा ग्रहण करने के कारण वह जागरूक हैं और अपने जाति के भविष्य को लेकर विशेष रूप

से चिन्तित रहते हैं। वे अपने जाति के उत्थान और जागरूकता के संदर्भ में स्पष्ट रूप से कहते हैं कि जाति का उत्थान सभी सम्भव है जब इसके सदस्यों के दिमाग में राजनीतिक जागरूकता का समावेश हो। राजनैतिक रूप जागरूक व्यक्ति समाज में एक दबाव समूह के रूप में कार्य करने लगता है और जनतान्त्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत अपने महत्व को प्रमाणित करता है।

श्रीमान ठ शिक्षित राजनीतिक कार्यकर्ता होने के कारण विभिन्न राजनैतिक समक्ष एक अपनी अच्छी पहचान बना ली है और वोट की राजनीति में सक्रिय योग्दान प्रदान करते हैं। विभिन्न राजनैतिक दलों के लोग वोट देने के व्यवस्था के अन्तर्गत सद्उपयोग करते हैं और अपेक्षित परिस्थितियों में अपने जाति को सुविधा प्रदान करते हैं। स्वयं भी लाभवान्ति होते हैं। इस प्रकार उनका ऐसा मत है डोम जाति का तभी विकास होगा तब उनमें राजनीतिक जागरूकता का प्रसार हो। उसके अभाव में यह जाति बहुत अधिक मुक्ति नहीं हो सकती है।